रेल सुरभि अंक - 42

मुख्यालय राजभाषा विभाग - मध्य रेल

मुख्यालय राजभाषा द्वारा की गई गतिविधियां

राजभाषा विभाग मुख्यालय द्वारा दिनांक 07 और 09 अप्रैल 2025 को मुख्यालय के संपर्क राजभाषा अधिकारियों एवं संपर्क राजभाषा कर्मचारियों के लिए आयोजित दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए
डॉ. विभावरी गोरे,
उप महाप्रबंधक (राजभाषा),
मध्य रेल।

राजभाषा विभाग मुख्यालय द्वारा दिनांक 07 और 09 अप्रैल 2025 को मुख्यालय के संपर्क राजभाषा अधिकारियों एवं संपर्क राजभाषा कर्मचारियों के लिए आयोजित दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए दीपा मंदयान,
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
(मुख्यालय), मध्य रेल।

राजभाषा विभाग मुख्यालय द्वारा डॉ. विभावरी गोरे, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), मध्य रेल की अध्यक्षता में दिनांक 15 मई 2025 को मध्य रेल के विविध मंडलों, कारखानों आदि पर कार्यरत अनुवादकों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई।

"रेल सुरभि"

अंक-42

अप्रैल-जून 2025

-: संरक्षक :-

धर्म वीर मीना

महाप्रबंधक

-:मार्गदर्शक:-

चंद्र किशोर प्रसाद

प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी

तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी

-: संपादक :-

डॉ. विभावरी गोरे

उप महाप्रबंधक (राजभाषा), मध्य रेल

-: उप संपादक :-

दीपा मंदयान

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय)

-: सहयोग :-

राकेश पांडे, कनिष्ठ अनुवादक

डॉ. वीरेंद्रसिंह राव, कनिष्ठ अनुवादक

-: संपर्क का पता :-

महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग

नया प्रशासनिक भवन, मध्य रेल, मुंबई छशिमट

फोन: 54753 / 54752/ 54754 (रेलवे)

022-22697123 (एमटीएनएल)

ई : मेल-dgmol12@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित सभी विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। उन्हें भारत सरकार या रेल मंत्रालय के विचार न समझा जाए ।

रचनाकार अपनी रचना की मौलिकता के लिए स्वयं जिम्मेदार है।

धर्म वीर मीना
महाप्रबंधक
Dharam Veer Meena
General Manager

सत्यमेव जयते

मध्य रेल,
छ शि म ट. मुंबई - 400 001

Central Railway,
CSMT, Mumbai - 400 001

महाप्रबंधक का संदेश

मुख्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित मध्य रेल की गृहपत्रिका रेल- सुरभि का यह अंक ई-स्वरूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। रेल सुरभि के इस अंक में देशभर के विभिन्न क्षेत्रों में बसनेवाले रचनाकरों से प्राप्त विभिन्न नवीन साहित्यिक रचनाओं को स्थान दिया गया है। रेल सुरभि पत्रिका के अब तक प्रकाशित सभी अंकों के ई-संस्करण मध्य रेल की वेबसाइट पर अपलोड किए गए हैं जिससे अब इस पत्रिका को पढ़ना पाठकों के लिए और भी सुगम हो गया है तथा इसे पढ़ने के प्रति पाठकों की रुचि में अब बढ़ोतरी भी हो रही है।

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम अब गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। वार्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 के लिए क्षेत्रवार ('क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों) के लिए हिंदी विषयक विभिन्न मदों पर विविध लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। मध्य रेल का अधिकांश भाग महाराष्ट्र में है जो कि राजभाषा नियमानुसार 'ख' क्षेत्र में आता है, अतः 'ख' क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्यों को हमें पूरा करना है। रेल सुरभि के इस अंक में पाठकों की सुविधा के लिए वर्ष 2025-26 के वार्षिक कार्यक्रम को भी स्थान दिया गया है।

गृह मंत्रालय एवं रेलवे बोर्ड के राजभाषा विभाग द्वारा चलाई जाने वाली राजभाषा विषयक सभी प्रोत्साहन योजनाएं मध्य रेल पर लागू हैं। मध्य रेल के राजभाषा विभाग द्वारा रेल सुरभि का नियमित प्रकाशन किए जाने से राजभाषा के प्रचार-प्रसार को और भी प्रगति मिल रही है। रेल सुरभि पत्रिका के इस अंक में प्रतिभाशाली रचनाकारों की रचनाएं शामिल की गई हैं। आप भी अपनी प्रतिभा को निखारते हुए इस पत्रिका के लिए अपनी रचनाएं भेजकर राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनें तथा अपना सहयोग प्रदान करें।

इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

(धर्म वीर मीना)
महाप्रबंधक

मध्य रेल
प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी का कार्यालय
छत्रपती शिवाजी महाराज टर्मिनस मुंबई,
पिन -400001 फोन नं. – 22620778
ईमेल- cso@cr.railnet.gov.in

Central Railway
Principal Chief Safety Officer's Office
Chhatrapati Shivaji Maharaj Terminus
Mumbai 400001 Phone No. : 22620778
Email- cso@cr.railnet.gov.in

मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश

मध्य रेल मुख्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा निरंतर और नियमित रेल सुरभि प्रकाशित की जाती है। गृह पत्रिका रेल सुरभि के इस अंक में संदेश देते हुए मैं एक बार फिर हर्ष का अनुभव कर रहा हूं।

राजभाषा विभाग द्वारा रेल सुरभि ई-पत्रिका के नियमित प्रकाशन के साथ-साथ राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजभाषा विषयक अन्य कई क्रियाकलाप किए जाते हैं जिनमें समय-समय पर कार्यशालाएं आयोजित करना, सुप्रसिद्ध साहित्यकारों की जयंतियां मनाना, राजभाषा विषयक विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करना, हिंदी पखवाड़े का आयोजन करना आदि प्रमुख हैं।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मध्य रेल की वेबसाइट अब हिंदी में खुलती है। मध्य रेल की वेबसाइट को द्विभाषी बनाने तथा उपयोगकर्ता द्वारा प्रथम विजिट पर वेबसाइट हिंदी में ही खुले, इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रयासरत राजभाषा कर्मी एवं अन्य सहयोगी सभी बधाई के पात्र हैं।

रेल सुरभि ई-पत्रिका के पिछले अंक में रेल सुरभि के पाठकों में गाड़ी संचालन एवं अप्रिय घटनाओं से बचने संबंधित जागृति बढ़ाने के उद्देश्य से रेल संरक्षा से संबंधित कुछ दोहों/सुविचारों को स्थान दिया गया था जिसे पाठकों ने गंभीरता से पढ़ा और सराहना भी की। अतः उसी प्रयोग को क्रमवार आगे बढ़ाते हुए इस अंक में भी पिछले अंक से इतर संरक्षा से संबंधित दोहों/सुविचारों को स्थान दिया गया है। पाठकों से मेरा आग्रह है कि इन संरक्षा सुविचारों को भी आप अवश्य पढ़ें एवं इस पर उचित अमल करें।

रेल सुरभि पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को पत्रिका के निरंतर और सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं एवं बधाई।

शुभकामनाओं के साथ।

चंद्रकिशोर

(चंद्र किशोर प्रसाद)
प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

-: अनुक्रमणिका :-

क्र.	रचना का नाम	विधा	रचनाकार (सर्वश्री/श्रीमती)	पृष्ठ सं.
1	भारतीय रेल इतिहास के ज्ञाता स्व. आर.आर. भंडारी	लेख	विमलेश चंद्र	05
2	भारतीय रेल का “कवच	तकनीकी लेख	दिलेश भिवगड़े,	09
3	तमसो मा ज्योतिर्गमय	कहानी	प्रमोद कुमार	13
4	कबीर... एक प्रासंगिकता	लेख	विकास कुमार बघेल	16
5	भारतीय विद्युत रेल	कविता	वीरेन्द्र कुमार रुलानिया	21
6	और नहीं हारुंगा	कविता	अनिल कुमार तिवारी	23
7	छुक-छुक की बात	कविता	अमित सुनील मेशराम	24
8	भारतीय रेल	कविता	जयराम कुर्सीजा	25
9	भावना की दीवार	कविता	प्रमोद सोनी	26
10	मेरी इल्तिज़ा	कविता	मंगेशरत्न सिंह	28
11	कितनी-कितनी बार	कविता	विजया गोस्वामी	29
12	मैं रेल की बात सुनाता हूं	कविता	फूलचंद धुर्वे	31
		मराठी खंड		
13	मराठीचा जागर	कविता	अभिजीत बाबुराव रोहेकर	34

लेख

भारतीय रेल इतिहास के ज्ञाता स्व. आर.आर. भंडारी

-विमलेश चंद्र

अंग्रेजों ने भले ही बहुत सारी रेलवे लाइन बनाईं लेकिन वे तत्कालीन भारतीय रेल के इतिहास और उसके निर्माण के बारे में समुचित जानकारी को पुस्तकों के पन्नों में समेटने से चूक गए। ब्रिटिश समय में भारत देश में यदि रेलवे से जुड़ी कोई अद्‌भुत घटना होती थी तो उसका समाचार या न्यूज़ लंदन के न्यूज़ पेपर में जोर-शोर से जरूर छपता था लेकिन उनके समय में इक्का-दुक्का पुस्तक ही लिखी गई थी। भारत के इतिहास और गौरवशाली परम्परा की हजारों साल पहले लिखी हुई पुस्तक या ग्रंथ अभी भी सुरक्षित रखी हुई मिल जाती है लेकिन भारतीय रेल के 170 साल के गौरवपूर्ण इतिहास की जानकारी लिखी हुई क्यों नहीं मिल पाती? मेरे समझ से भारतीय रेल के 170 साल के इतिहास में सम्पूर्ण जानकारी वाली कुल 170 किताबें भी नहीं लिखी गयी हैं। जो थोड़ी बहुत लिखी गईं हैं, वे भी पूरी गहराई वाली जानकारी न होकर सामान्य जानकारी वाली हैं। इसमें भी ज्यादातर ब्रिटिश लेखकों द्वारा लिखी हुई हैं। और-तो-और रेलवे इतिहास से जुड़ी मुख्य-मुख्य फ़ोटो भी सहेज कर नहीं रखी जा सकी हैं। जो थोड़ी बहुत पुस्तक लिखी गईं हैं वह लोगों के अपने-अपने पर्सनल इफोर्ट के तौर पर लिखी गईं हैं। कारण जो भी हो भारतीय रेल के इतिहास को कभी सीरियसली नहीं लिया गया है। यह सब मैं इसलिए लिख या कह सकता हूं कि मेरे पास भारत और विदेशी रेलवे की अनेकों पुस्तक हैं और मैं रेलवे इतिहास विषय पर कुल 500 से ज्यादा लेख भी लिख चुका हूं। अंततः यह कह सकते हैं कि रेलवे को शुरू से लेकर अब तक केवल आमदनी के नजरिये से देखा गया है और रेलवे के इतिहास को लिखना एक गैर जरूरी काम माना गया है। इसलिए रेलवे इतिहास को बेहतर और सम्पूर्ण तरह से नहीं लिखा गया। जिस प्रकार भारतीय रेल अपने शुरुआती दौर से लेकर आज तक भारतीय जन मानस से आश्चर्य तथा अटूट रूप से अनेक विभिन्नताओं के साथ जुड़ा हुआ है। उसी प्रकार भारतीय रेल का इतिहास भी अनेक विभिन्नताओं तथा छोटे-छोटे खंड में फैला हुआ है। भारतीय रेलों की शुरुआत प्रारम्भिक गारंटी प्रणाली (1849-1868) के अंतर्गत हुई थी जिसमें निजी कंपनियों को अपने निवेश के लिए आमंत्रित किया गया था तथा रेलों के निर्माण तथा परिचालन के लिए कई कम्पनियां स्थापित हुई थी। इसके बाद नई नीति अपनाई गई और राज्यों द्वारा रेल निर्माण कार्य (1869-1881) किया गया था और कई रेलगाड़ियों की शुरुआत तथा संचालन किया गया था। फिर नई गारंटी प्रणाली (1882-1900) के अंतर्गत सरकार ने रियासतों को अपने-अपने स्टेट में खुद रेलवे लाइन का निर्माण करके रेलगाड़ियां चलाने का अधिकार दिया तथा पुरानी गारंटी प्रणाली में कुछ संशोधन किए गए तथा आगे का निर्माण कार्य कंपनियों को दिया गया। इसके बाद रेलों को सरकार द्वारा नियंत्रण में ले लिया गया तथा रेलों का राष्ट्रीयकरण करके सरकार ने स्वयं निर्माण तथा संचालन कार्य अपने हाथ में ले लिया। वर्ष 1951-1952 में रेलवे का पुनर्गठन किया गया। इस प्रकार वर्ष 1849 से लेकर वर्ष 1950 तक अर्थात इस एक सौ वर्ष में लगभग सैकड़ों रेल कंपनियों तथा स्टेट रेलवे द्वारा भारतीय रेलों का निर्माण कार्य किया गया और उनका संचालन किया गया तथा उनके नियंत्रण में रखा गया था। बहुत सारी रेल कम्पनियों तथा स्टेट रेलवे के होने के कारण इन सभी का निर्माण कार्य और परिचालन तथा गाडियों के कोचों तथा इंजनों की पूरी जानकारी के इतिहास को एक साथ इकठ्ठा करना और उन्हें पुस्तक का

रूप देना अपने आप में एक अत्यंत ही दुरूह तथा मुश्किल भरा कार्य था और वह भी तब, जब इनके इतिहास के बारे में बहुत कम लेखन तथा पठन किया गया हो किन्तु "जहां चाह, वहां राह" वाली बात यहां भी लागू होती है। इस कहावत को चरितार्थ किया था स्वर्गीय रतनराज भण्डारी जी ने। इन्होंने भारतीय रेल पर 24 पुस्तकें लिख कर भारतीय रेल के इतिहास की बहुत सारी जानकारियां हम सभी के सामने प्रस्तुत करके एक इतिहास रच दिया था।

जन्म एवं पढ़ाई-श्री भण्डारी जी का जन्म 09 अगस्त 1946 को जोधपुर (राजस्थान) में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा जोधपुर में हुई तथा यहीं से एम.बी.एम. इंजीनियरिंग कालेज से 1967 में यांत्रिक इंजीनियरिंग की डिग्री - बी.ई.(आनर्स) परीक्षा सर्व प्रथम रहकर उत्तीर्ण की। वर्ष 1967 बैच के भारतीय रेलवे यांत्रिक इंजिनियरिंग सेवा परीक्षा में चयन होने पर वर्ष 1968 में एक अधिकारी के रूप में सहायक यांत्रिक इंजीनियर के पद पर दक्षिण पूर्व रेलवे के खड़गपुर में सर्वप्रथम नियुक्ति हुई। नियुक्ति के समय से ही इन्हें रेलवे के इतिहास, रेल लाइनों के निर्माण, रेल इंजनों/कोचों/वैगनों के प्रकार तथा सभी स्टेट रेलवे या रेल कंपनियों के संगठनात्मक इतिहास को जानने की रुचि पैदा हुई और इन्होंने इसके लिए अनेक जगहों की यात्राएं शुरू की और जानकारियां इकठ्ठा करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे इनके पास रेलवे से संबंधित अनेक जानकारियां इकठ्ठा हो गयी। इस प्रकार इन जानकारियों को ये एक-एक पुस्तक का रूप देते गए जिसके फलस्वरूप आज हम लोगों के समक्ष इन्होंने रेलवे पुस्तकों की एक लंबी श्रृंखला उपलब्ध करा दी जो भारतीय रेल के लिए एक लिखित रिकार्ड बन गया, किन्तु इनका खुद का जीवन काल कम होने के कारण बहुत सारी क्षेत्रीय रेलों का इतिहास हम लोगों के समक्ष पुस्तक के रूप में नहीं आ पाया।

विभिन्न पदों पर कार्य :-वर्ष 1968 में दक्षिण-पूर्व रेलवे के खड़गपुर में सहायक यांत्रिक इंजीनियर के रूप में नियुक्ति के कुछ वर्ष बाद आपका स्थानांतरण पश्चिम रेलवे के लोअर-परेल कारख़ाना में हुआ तथा वर्ष 1978 तक पश्चिम रेलवे के मुम्बई, कोटा, दाहोद, में कारख़ाना प्रबंधक तथा जयपुर में विभिन्न पदों पर कार्य किए। वर्ष 1979 से 1983 तक राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, नई दिल्ली में निदेशक पद पर कार्य किया तथा वर्ष 1984 से 1986 तक उत्तर रेलवे में वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर के पद पर कार्य किया। वर्ष 1986 से वर्ष 1989 तक उत्तर रेलवे में सहायक मंडल रेल प्रबंधक, वर्ष 1989 से 1991 तक नई दिल्ली में राइट्स के महाप्रबंधक तथा वर्ष 1991 से 1996 तक रेलवे स्टाफ कालेज वडोदरा में वरिष्ठ प्रोफेसर, जुलाई 1996 से जनवरी 1999 तक विशाखापट्टनम तथा अजमेर में मंडल रेल प्रबंधक, फरवरी 1999 से फरवरी 2002 तक दक्षिण-पूर्व रेल में मुख्य कार्मिक अधिकारी, फरवरी 2002 से जुलाई 2003 तक दक्षिण रेलवे में मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, अगस्त 2003 से दिसम्बर 2003 तक रेलवे बोर्ड में सचिव रहे तथा इसके बाद कोलकाता में जनवरी 2004 से अक्तूबर 2005 तक दक्षिण-पूर्व रेलवे में महाप्रबंधक तथा नवंबर 2005 से अगस्त 2006 तक रेलवे बोर्ड में सदस्य यांत्रिक के पद पर कार्य करने के बाद सेवानिवृत्त हो गए थे। सेवा निवृत्त के बाद जोधपुर में नवम्बर 2006 से 08 अगस्त 2008 केंद्रीय प्रशासनिक प्राधिकरण में प्रशासनिक सदस्य के रूप में कार्य किया। इनकी मृत्यु वर्ष 2012 में 66 वर्ष की आयु में हुई।

प्रशिक्षण और प्रबंधन :- इन्होंने रेलवे प्रबंधन, योजना प्रबंधन, परिचालन अनुसंधान, संचार प्रवीणता, संगठनात्मक अभिरुचि से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का देश और विदेश में आयोजन किया। इन्होंने वर्ष 1995-96 में तंजानिया रेलवे कारपोरेशन के लिए चार प्रबंधन विकास पाठ्यक्रमों का भी आयोजन किया। इन्होंने रेलवे स्टाफ कालेज से परिचालन अनुसंधान में विशेष प्रशिक्षण लिया था। यूनाइटेड किंगडम के

ब्रिटिश रेल इंजीनियरिंग, डर्बी से रोलिंग स्टॉक मेंटेनेंस प्रैक्टिस, यू.के. के मानचेस्टर बिजनेस स्कूल से स्ट्रैटेजिक मैनेजमेंट तथा यू.के. के यू.एम.आई.एस.टी. एंड एम.बी.एस. से संगठनात्मक अभिरुचि तथा यू.के. के इमेजिनेशन टेक्नोलॉजी से संचार प्रवीणता में विशेष प्रशिक्षण लिया था।

रुचियां और अध्ययन:- इनकी प्रमुख रुचि रेलवे के इतिहास, औद्योगिक इंजीनियरिंग, संगठनात्मक अभिरुचि और संचार प्रवीणता में थी। इन्हें विशेष रूप से प्रबंधन के शिक्षण का व्यापक अनुभव प्राप्त था। इन्होंने गाड़ी परीक्षण के स्तर पर और मालभाड़ा वैगनों को अलग करने पर पड़ने वाले प्रभाव, बड़ी प्रदर्शनियों के लिए नई दिल्ली के रेल परिवहन संग्रहालय (नया नाम- राष्ट्रीय रेल संग्रहालय) का पुर्नगठन, थर्मल पावर प्लांटों के लिए बंद लाइनों की डिजाइन और सलाह देने के संबंध में विशेष अध्ययन भी किया था।

पुस्तकों का लेखन :- ये भारतीय रेल के एक प्रतिष्ठित लेखक थे। इनके द्वारा पर्वतीय रेलवे तथा क्षेत्रीय रेलों पर कुल 24 पुस्तकें लिखी गईं थी। यह अब तक किसी एक व्यक्ति द्वारा भारतीय रेल विषय पर पुस्तक लिखने का एक रिकार्ड है। निश्चित ही भारतीय रेल के अभी अप्रैल 2023 में पूरे हो रहे 170 वर्षों में अब तक इतनी रेल पुस्तकें अन्य किसी ने भी नहीं लिखा है। इनके हृदय में सदैव रेलवे के बारे में और अधिक से अधिक जानने की उत्कृष्ट इच्छा रहती थी। ये किसी भी वस्तु के इतिहास में और अधिक विस्तार में जाकर उसके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करते थे। इसीलिए ये पूरे भारतीय रेल में रेलकर्मियों के बीच "चीफ मेमोरी आफ़िसर" तथा "रेल इतिहास के ज्ञाता" के रूप से विख्यात थे।

इनके द्वारा सर्वप्रथम 1980 में "रेल ट्रांसपोर्ट म्यूजियम" नामक पुस्तक लिखा गया था जिसे तत्कालीन रेल ट्रांसपोर्ट म्यूजियम, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया था। इसके बाद इनकी दूसरी पुस्तक "लोकोमोटिव इन स्टीम" वर्ष 1981 में रेल मंत्रालय ने प्रकाशित किया था। इनकी तीसरी पुस्तक "जोधपुर रेलवे" को वर्ष 1982 में उत्तर रेलवे ने प्रकाशित किया था। इनकी चौथी पुस्तक "कालका-शिमला एंड कांगड़ा वैली रेलवे" को वर्ष 1983 में उत्तर रेलवे ने प्रकाशित किया था। इनकी पांचवी पुस्तक "एक्सोटिक इंडियन माउंटेन रेलवे" को वर्ष 1984 में रेल मंत्रालय ने प्रकाशित किया था। इनकी छठवीं पुस्तक "वेस्टर्न रेलवे मीटर गेज सिस्टम" को वर्ष 1987 में पश्चिम रेलवे ने प्रकाशित किया था। सातवीं पुस्तक "ब्लूचिप रेलवे" को वर्ष 1987 में दक्षिण-पूर्व रेलवे ने प्रकाशित किया था। आठवीं पुस्तक "आई.एस.ओ.-9000" को 1992 में रेलवे स्टाफ कालेज, वड़ोदरा द्वारा प्रकाशित कराया गया तथा नौवीं पुस्तक "प्रेजेंटेशन स्कील्स" को 1994 में रेलवे स्टाफ कालेज, वड़ोदरा द्वारा प्रकाशित कराया गया तथा दसवीं पुस्तक "वेस्टर्न रेलवे नैरोगेज सिस्टम" 1997 में पश्चिम रेलवे ने प्रकाशित किया था। इनकी ग्यारहवीं पुस्तक "दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे" को वर्ष 2001 में रेल मंत्रालय ने प्रकाशित किया था। बारहवीं पुस्तक "साऊथ ईस्टर्न रेलवे-मार्च टू न्यू मिलेनियम" वर्ष 2001 में दक्षिण-पूर्व रेलवे ने प्रकाशित किया था। तेरहवीं पुस्तक "नीलगिरी माउंटेन रेलवे" को वर्ष 2002 में रेल मंत्रालय ने प्रकाशित किया था। चौदहवीं पुस्तक "अजमेर वर्कशॉप" को वर्ष 2002 में पश्चिम रेलवे ने प्रकाशित किया था। पंद्रहवीं पुस्तक "कालका–शिमला रेलवे" को वर्ष 2003 में रेल मंत्रालय ने प्रकाशित की थी। सोलहवीं पुस्तक "सदर्न रेलवे–ए सागा ऑफ 150 ग्लोरीयर्स इयर्स (1852-2003)" को वर्ष 2003 में दक्षिण रेलवे ने प्रकाशित किया था। सत्रहवीं पुस्तक "माथेरान लाईट रेलवे" को 2004 में रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित कराया गया तथा अठारहवीं पुस्तक "इंडियन रेलवेज़ : 150 ग्लोरीयस इयर्स" को वर्ष 2005 में प्रकाशन विभाग (सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय) द्वारा प्रकाशित किया गया था। उन्नीसवीं पुस्तक "कांगड़ा वैली रेलवे" को वर्ष 2006 में रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित किया गया। इनकी बीसवीं पुस्तक "वेस्टर्न रेलवे: ए ग्लोरीयस सागा" को वर्ष 2008 में पश्चिम रेलवे द्वारा प्रकाशित किया गया। इनकी इक्कीसवीं पुस्तक

दक्षिण रेलवे–150 वर्षो की यशस्वी गाथा (2006), बाईसवीं पुस्तक ए पीप इन टू इंडियन रेलवे हेरिटेज, तेइसवीं पुस्तक इवैल्यूवेशन ऑफ साऊथ ईस्ट रेलवे और चौबीसवीं पुस्तक हिन्दी में "भारतीय रेल-150 वर्षों का सफर" नामक पुस्तकें शामिल हैं। इस प्रकार इनके द्वारा कुल 24 पुस्तकों का लेखन तथा प्रकाशन हुआ था। ये सभी पुस्तकें अपने-अपने विषय से संबंधित सभी महत्वपूर्ण विवरण तथा उनका विस्तृत इतिहास उपलब्ध कराती हैं तथा साथ ही साथ अनेक अज्ञात तथा दुर्लभ फोटोग्राफ युक्त एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ भी साबित होती हैं। इन पुस्तकों को संबंधित क्षेत्रीय रेलों या राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, नई दिल्ली ने प्रकाशित कराया था। पुस्तक लेखन के साथ-साथ भारतीय रेल इतिहास विषयों पर इनके लगभग एक सौ से ज्यादा लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके थे। जब–जब भी भारतीय रेल के इतिहास की चर्चा होगी, तब उस समय अवश्य ही इनके इन पुस्तकों की आवश्यकता और उपयोगिता को महसूस किया जाता रहेगा। भारतीय रेल के बारे में इतनी अधिक पुस्तकें लिखने के लिए न केवल भारतीय रेल परिवार इनका अत्यंत आभारी है बल्कि यह एक रिकार्ड होने के कारण इस अद्भुत तथा अमूल्य योगदान को भारतीय रेल और रेलवे का लेखक सदैव याद रखेगा ।

सेवानिवृत्त रेल अधिकारी, पश्चिम रेलवे

मकान नंबर-32, शिवाय बंगलोज,

पोस्ट-बाजवा, वडोदरा, गुजरात

****

हरा सिगनल देखकर, ये मत जाना भूल ।

राह में आ सकता है, कभी भी कोई शूल ।।

चलते रहो - चलते रहो, जहां - जहां हो ग्रीन ।

लाल देख अगर चले, कभी भी कोई शूल ।।

स्वागत हर यात्री का, दें सबको सम्मान ।

नाराज कोई न रहे, चहरे पर मुस्कान ।।

लेख

भारतीय रेल का “कवच”

“KAVACH” (Train Collision Avoidance System)

- दिलेश भिवगड़े

“कवच” क्या है ?

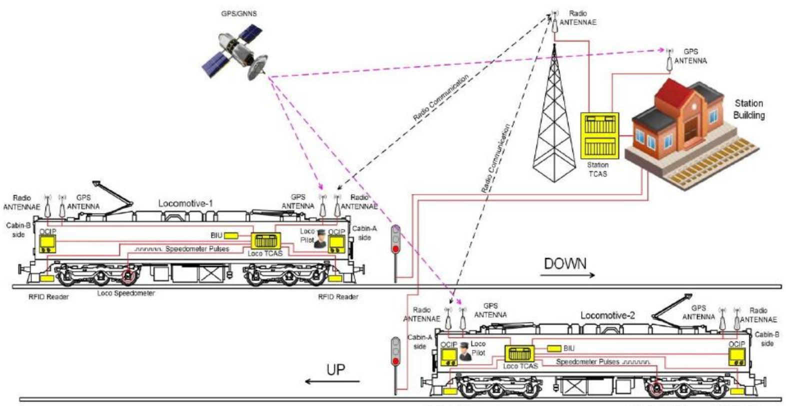

Figure 2.1: KAVACH system architecture

"**कवच**" तकनीक भारतीय रेल की स्वयंचालित ट्रेन टक्कर सुरक्षा प्रणाली है। भारतीय रेल ने "शून्य दुर्घटना" के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वदेशी रूप से विकसित स्वयंचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली (ATPS) का निर्माण किया है। ए.टी.पी.एस को अत्याधुनिक तकनीक एवं उच्चतम स्तर का सुरक्षा सर्टिफिकेट “**एस.आई.एल.-4**” (सुरक्षा मानक स्तर - 4) प्रदान किया गया है।

इस आधुनिक तकनीक और ट्रेन टक्कर सुरक्षा प्रणाली (TCAS) को ही "**कवच**" नाम दिया गया है। “कवच” को इस तरह से बनाया गया है कि यह उस स्थिति में एक ट्रैन को आटोमेटिक रूप से रोक देगी, जब उसे निर्धारित दूरी के भीतर उसी लाइन पर दूसरी ट्रेन के होने की जानकारी मिलेगी। इस प्रणाली के कारण अनेक मानवीय त्रुटियों जैसे कि लाल सिगनल को नज़र अंदाज कर पार करने या किसी अन्य खराबी पर ट्रेन अपने आप रुक जायेगी एवं उनसे होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। अगर ट्रेन चालक ट्रेन को नियंत्रित करने में विफल रहता है तो आटोमेटिक रूप से "**कवच**" प्रणाली ट्रेन ब्रैकिंग सिस्टम को ऑन करता है एवं दो लोकोमोटिव के बीच टकराव को रोकता है । “**शून्य दुर्घटना**” के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए माननीय केंद्रीय मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी के मार्गदर्शन में आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत प्रथम चरण में तक़रीबन 10,000 रेल इंजनों में कवच प्रणाली लगाने का लक्ष्य रखा गया है जिसके अंतर्गत अप्रैल 2025 से मध्य रेल के नागपुर मंडल के विद्युत् लोको शेड, अजनी के 303 थ्री-फेज लोकोमोटीव में इसे लगाया जाएगा ।

"कवच" प्रणाली का कार्य :-

कवच मुख्य रूप से निरंतर पर्यवेक्षण के सिद्धांत पर काम करता है और इसे ब्लॉक सीमाओं के भीतर ट्रेन की गति बनाये रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह स्वयंचालित रूप से ब्रेक लगाकर ट्रेन को धीमा कर सकता है या पूरी तरह से रोक सकता है। अगर लोको पायलट गति प्रतिबंधों का उल्लंघन करता है या खतरे की स्थिति में सिगनल पार होने संबंधी मामलों (SPAD) को रोकने के लिए समय पर कार्यवाही करने में विफल रहता है जिससे

ब्लॉक सेक्शन या स्टेशनों पर टकराव की सम्भावनाओं को कम किया जा सकता है। यह लोको पायलट के कैब में DMI स्क्रीन पर सिगनल प्रदर्शित करता है जिससे कम दृश्यता (Fogging) वाले मौसम में लोको पायलट की सहायता करता है।

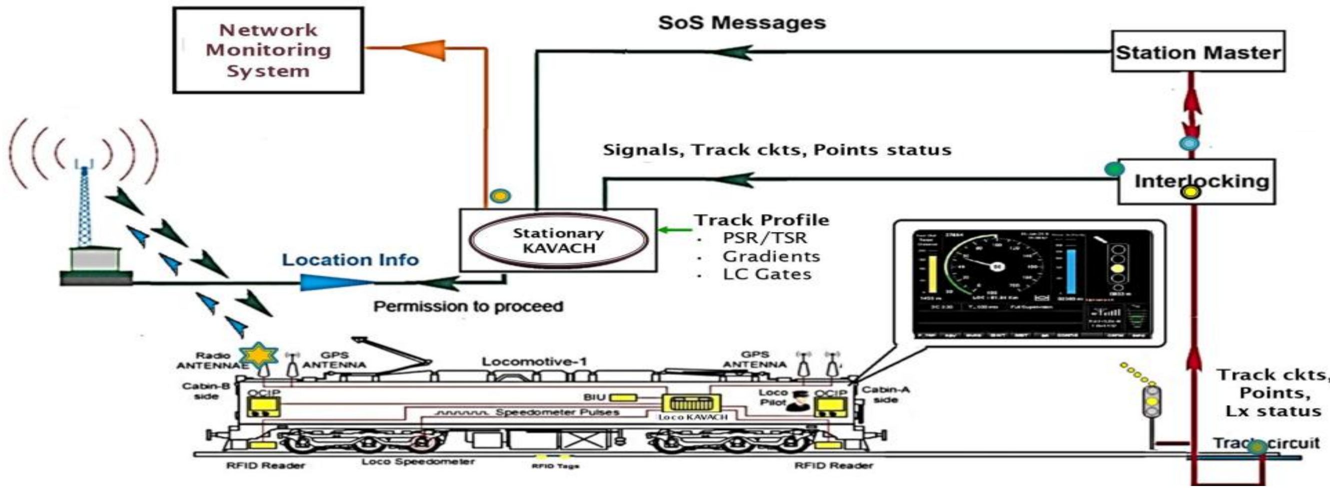

कवच प्रणाली की प्रमुख विशेषताएं :-

1. यह ट्रेन को ओवरस्पीडिंग से बचाता है।

2. यह ट्रेनों की सीधी टक्कर, पीछे की टक्कर से बचाता है।

3. यह लाल बत्ती सिगनल के उल्लंघन (SPAD) से बचाता है।

4. यह लोको कैब में ही सिगनल का आस्पेक्ट दर्शाता है।

5. यह लेवल क्रासिंग गेट पर ऑटोमेटिकली सीटी बजाने का काम करता है।

6. आपातकाल की स्थिति में SOS मैसेज भेजकर गाड़ियों को जहां-तहां रोका जा सकता है।

7. यह नेटवर्क मॉनिटरिंग सिस्टम (NMS) द्वारा ट्रेनों के संचलन की निगरानी करता है।

8. ये ट्रेन की लंबाई की गणना करता है।

9. यह मूवमेंट अथॉरिटी का निरंतर अपडेट प्रदान करता है। (MA- वह दूरी जहां तक ट्रेन को बिना किसी खतरे के जाने की अनुमति है।)

10. यह ब्रेकिंग दूरी की निरंतर निगरानी करता है।

11. यह सुरक्षा मानक स्तर - 4 से प्रमाणित है।

कवच प्रणाली के मुख्य तत्त्व

1. कंप्यूटर (लोको TCAS और स्टेशन TCAS)

2. यु.एच.एफ / जी.एस.एम रेडियो एंटीना

3. रेडियो फ्रीकवेंसी आइडेंटिफिकेशन (RFID Tag और Reader)

4. ब्रेक इंटरफ़ेस यूनिट (BIU)

5. LP-OCIP / SM-OCIP (लोको पायलट ऑपरेशन कम इंडिकेशन)
पैनल स्टेशन मास्टर ऑपरेशन कम इंडिकेशन पैनल)

यह यूनिट स्टेशन और इंजनों पर दोनों जगह पर फिट किये गए हैं । लोको कवच और स्टेशन कवच के बीच मुख्यतः तीन संचार तकनीक का उपयोग किया गया है :

1. यु.एच.एफ रेडियो संचार **2.** जी.एस.एम / जी.पी.आर.एस संचार **3.** जी.पी.एस / जी.एन.एस.एस

कवच के मुख्य उपकरण एवं उनके कार्य: -

लोको और स्टेशन का वाइटल कंप्यूटर:-

यह कवच इकाई का दिल है। इसमें कई इलेक्ट्रॉनिक मॉड्यूल होते हैं जिनमें सॉफ्टवेयर होते हैं जो सिगनलिंग और इंटरलॉकिंग सिस्टम से जानकारी प्राप्त करता है और संदेश उत्पन्न करता है जो रेडियो यूनिट द्वारा वास्तविक समय में लोकोमोटिव को रिले किये जाते है।

रेडियो यूनिट एंटीना :-

कवच रेडियो यूनिट में दो UHF रेडियो मॉडेम होते हैं जिनमें Tx/Rx एंटेना को जोड़ा होता है। इनकी 425-430 मेगाहर्ट्ज की वर्किंग फ्रीक्वेंसी रेंज होती है। इसके साथ ही GSM / GPRS और GPS/GNSS संचार एंटेना लगाया है। GPS का उपयोग लोकोमोटिव का लाइव स्थान अपडेट करने हेतु तथा GPS समय को लोको कंप्यूटर के समय के साथ समंवयित करने के लिए किया जाता है। GSM इंटरफ़ेस का उपयोग त्रुटि संदेश भेजने तथा लोको और स्टेशन कवच की कुंजी (Authentication Key) स्थानांतरित करने के लिए किया जाता है।

आर एफ आई डी टैग / रीडर यूनिट :- (RFID TAG / READER UNIT)

RFID टैग को पूर्व निर्धारित अंतराल पर ट्रैक स्लीपर पर लगाया जाता है। इनकी 865-867 मेगाहर्ट्ज की वर्किंग फ्रीक्वेंसी रेंज होती है। यह स्टेशन सेक्शन, पॉइंट पर सिग्नल के पास और ब्लॉक सेक्शन ट्रैक पर लगाया जाता है।

इसमें पहले से प्रोग्राम किया गया डेटा और एक विशिष्ट ट्रैक पहचान संख्या (TIN) होती है। RFID टैग ट्रैक की जानकारी और सटीक स्थान के डेटा को लोको कवच कंप्यूटर को स्थानांतरित करता है] जब कोई लोको उसके ऊपर से गुज़रता है तब RFID रीडर द्वारा स्कैन किया जाता है और प्रोसेसिंग के लिए लोको कवच कंप्यूटर को सूचना भेजता है।

ड्राइवर मशीन इंटरफ़ेस स्क्रीन (DMI) :-

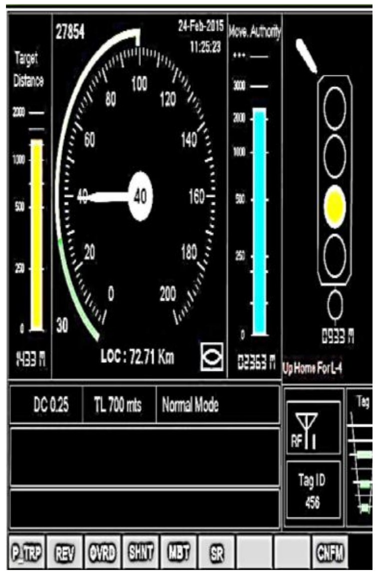

यह लोको पायलट / स्टेशन मास्टर ऑपरेशन कम इंडिकेशन पैनल के नाम से जाना जाता है। यह एक डिस्प्ले यूनिट है जिसमें चेतावनी और सूचना प्रदर्शित होती है। इसमें लोको पायलट / स्टेशन मास्टर के लिए एक एनालॉग SOS काउंटर और SOS जनरेट करने और संदेश स्वीकार करने के लिए बटन है। यदि लोको कवच किसी लोको / स्टेशन से उत्पादित SOS को प्राप्त करता है तो मूल स्रोत की लोकेशन की ओर जाने वाली ट्रेनों में ब्रेक लग जाएंगे।

ब्रेक इंटरफ़ेस यूनिट (BIU) :-

बीआईयू कवच कंप्यूटर और लोकोमोटिव के ब्रेकिंग सिस्टम के बीच इंटरफेस प्रदान करता है। यह लोको कवच कंप्यूटर द्वारा ब्रेक कमांड के अनुसार लोकोमोटिव में नॉर्मल ब्रेक, सर्विस ब्रेक या आपातकालीन ब्रेक लगाता है। यह लोको पायलट द्वारा मैन्युअल ब्रेक और कवच द्वारा ब्रेक के बीच सबसे अधिक ब्रेक की मांग को प्राथमिकता देता है और उसके अनुसार ब्रेक लगाता है।

कवच का सफल परीक्षण :-

दिनांक 8 मार्च 2022 को सिकंदराबाद मंडल के अंतर्गत गुल्लागुड़ा से चित्तगिद्दा सेक्शन में ट्रेन टक्कर सुरक्षा प्रणाली कवच का परीक्षण किया गया था। परीक्षण के दौरान 160 किमी प्रति घंटे की रफ़्तार से एक ट्रेन और एक इंजन को एक ही पटरी पर आमने-सामने आते हुए चलाया गया और कवच टेक्नोलॉजी के कारण ट्रेन और इंजन आपस में टकराए नहीं और ट्रेन के सामने आ रहे इंजन को 380 मीटर दूर ही कवच प्रणाली द्वारा ब्रेक लगाकर रोक दिया गया। इसका सफल परीक्षण, माननीय रेल मंत्री एवं माननीय रेलवे बोर्ड चेयरमैन की मौजूदगी में हुआ।

कवच प्रणाली के फायदे :-

भारतीय रेल में कवच प्रणाली (आधुनिक तकनीक) लगने से लोको पायलट ख़राब मौसम में भी सिगनल को बेहतर ढंग से देख पाएंगे और तकनीकी खामियों या मानवीय भूल से होने वाली ट्रेनों की टक्कर को रोका जा सकता है। इससे ट्रेनों का संचालन बेहतर और सुरक्षित तरीके से हो सकता है।

सीनियर सेक्शन इंजीनियर,
विद्युत लोको शेड, अजनी

कहानी

तमसो मा ज्योतिर्गमय

- प्रमोद कुमार

लछिया ने अपना पेट-तन काट कर दो पैसे जमा किये थे। सोचा था, इस दिवाली मिट्टी की बनी लछमी-गनेश की मूरत खरीद लायेगी। मुन्नी को कब तक अपना दुध पिलायेगी; अब तो होशियार हो गई है। उसके लिए एक कटोरी-चम्मच खरीद दूंगी, वह भी धनतेरस के दिन। खुद से पी लेगी। एक पंथ दो काज। खिलौने भी मुन्नी को चाहिए। मस्तिष्क में इन ख्यालों को बुनते हुए पैसे ढूंढ रही थी।

'' यहीं तो पैसे रखे थे, आखिर कहां गये? ' इन्हीं ख्यालों में मग्न लछिया ने सारा घर छान मारा। लेकिन पैसे हाथ नहीं लगे। अब वह क्या करेगी? तभी उसे याद आया। हरखू अलस्सबाह दस रुपये मांग रहा था। उसके लाख गिड़गिड़ाने पर भी उसने उसे एक कौड़ी भी नहीं दी थी। फिर पैसे कहां गये?

लछिया हाथ जोड़कर हरखू से कह रही थी -

'आज के दिन तो परेशान मत कर।' हरखू गिड़गिड़ाकर बोला - 'सिरफ़ दस रुपये दे दे। आज देखना, हजार रुपये जीत कर लाऊंगा, तेरे सुगंध- भरे आंचल में डाल दूंगा।'

हरखू जितना ही भरोसा दिला रहा था; लछिया का अविश्वास उतना ही उसके भरोसे पर भारी पड़ रहा था। बोली - 'घर में दीये जलाने को पैसे नहीं, जम को भगाने के लिए एक बूंद तेल नहीं, और तुझे दस रुपये चाहिए। बेगैरत.. नहीं दूंगी मैं - जा।'

उसीने रुपये गायब किये होंगे। लछिया ने एक नजर मुन्नी को देखा और उसे कलेजे से लगा लिया। उसके नेत्र डबडगा गये, अपनी विवशता पर। वह बैठी अपने भाग्य को कोसती रही। हरखू को भला-बुरा कहती रही- ' एक मर्द भी मिला तो निर्दयी।

तुम्हारे लिए बाप के दिल में तनिक भी दया नहीं। तेरे भाग्य फूटे हैं मुन्नी। भरपेट खाने को नहीं देता, बदन ढकने को समूचा कपड़े नहीं देता। ऊपर से रोज रात को तन नोचता है। निष्ठुर हृदय का है तेरा बाप। जो कमाता है, जुए में जाकर फूंक देता है। अपने घर को अंधेरा कर दूसरे का रोशन करता है।' वह आंसू बहाती रही - अपनी मुन्नी का मुंह देखकर।

हरखू दबे पांव आकर बोला - ' लछिया, मैं कहता था न। इतने सारे रुपये जीते हैं। ये लो, पकड़ो। वह प्रथम बार जुए में जीत कर आया था। अपनी जीत पर उसे गर्व हो रहा था। बोला- 'कितना चाहिये?'

'तो तुमने पैसे चुराए थे। मुझे नहीं चाहिए, तुम्हारे जीत के रुपये, तुम्हारे हराम की कमाई। उसका असर भी नहीं पड़ने दूंगी, मुन्नी पर। ले आ, शराब की बोतल, अपनी जीत की दिवाली मना।' लछिया जैसे तिलमिला गई। वह अपने आप को ज़ब्त न कर सकी।

हरखू ने गुस्से में आकर सारे रुपये बिखेर दिये। कुछ मुन्नी के पहलू में जा गिरे। लछिया ने देखा - मुन्नी सहज भाव से एक दस का नोट अपनी नन्हीं उंगलियों से पकड़ी हुई थी। मानो कह रही हो -' यह लो, मां। मेरे लिए एक चम्मच खरीद ला। अब मैं तुम्हें कभी तंग नहीं करूंगी।'

'नहीं।...' वह चिल्ला उठी। उसने मुन्नी के हाथ से रुपये झपट कर फेंक दिये। हरखू ने पलट कर देखा। उसे हिम्मत नहीं हुई। उसका ज़मीर कह रहा था -

'आज भी तेरी हार हुई है, हरखू। हमेशा की तरह आज भी लछिया बाजी मार गई। अगर जीतना है, तो उसके दिल को जीत। अपने को सुधार। उस दिन तुम्हारी सच्ची जीत होगी।' स्त्रियां प्यार और सम्मान की भूखी होती है, वह पुरुष से सच्चे सोहबत और सहानुभूति की अपेक्षा रखती है।

लछिया मुन्नी को ले कमरे से बाहर निकल गई।

अंधेरा घना हो रहा था। हरखू ने बाहर आकर देखा - हर तरफ रंग-बिरंगी रोशनी का नज़ारा था। अंधेरे पर जैसे उजाले का साम्राज्य हो गया हो। अपने-अपने घरों के बाहर गृहिणियां दीप जला रही थी। बच्चों को, प्रसन्न होकर पटाखे छोड़ता देख, मुन्नी का चेहरा उसकी आंखों के सामने तैर गया। लछिया इस वक़्त कहां गयी होगी। उसे चक्कर आ गया। मानो उसके अंदर पटाखे छूट रहे हों। वह खुद को संयत करते हुए अंदर आकर फ़र्श पर लेट गया।

लछिया आ गई थी।

हरखू को अधखुली आंखों में दीप्ति उभर आई थी। वह हड़बड़ा कर उठ बैठा। देखा, दिये जगमगा रहे थे। मुन्नी खेल रही थी। मिट्टी के चंद खिलौने उसके इस खेल में साथ निभा रहे थे। एक नया चम्मच चमचम कर रहा था, जिसे वह कभी पकड़ने की चेष्टा करती, तो कभी उसे गौर से देखती। उसने मुन्नी को गोद में उठा लिया। उसे बेतहाशा चूमने लगा। उसे प्यार करता रहा। आज पहली बार उसने मुन्नी को गोद में उठाया था। मुन्नी पिता को देख कभी हॅंसती तो कभी खिलखिला उठती।

उसने देखा -

लछिया एक कोने में पूजा-अर्चना की तैयारी में लगी हुई थी। गुनगुना रही थी- 'तमसो मा ज्योतिर्गमय!'

उसने एक थाल में कुछ पुष्प, फल-प्रसाद और मिठाइयां रख दी। थोड़े-सा घी एक दिये में डालकर उसे आरती की थाली में रख दिया।

लछिया जैसे ही उठी, उसने देखा - मुन्नी अपने पिता की गोद में हँस रही थी। हरखू ने लछिया को देखा और लछिया ने हरखू को। मुन्नी के पिता के होंठ को कंपित होते देख उसका हृदय करुणा से भर उठा।

'मैं तुझे कितना दुख देता हूं। बहुत शर्मिन्दा हूं। मुझे क्षमा कर दे। मैं अब कभी जुए पर नहीं जाऊंगा। तुम्हारी हिम्मत और धैर्य ने मुझे आज जगा दिया है। खुद टूट कर, बिखर कर तुमने मेरा निर्माण किया है। अब जीवन में कभी अंधेरा नहीं रहेगा, लच्छो। देखना, कड़ी मेहनत कर कमाऊंगा। तेरे बदन पर अब फटे कपड़े नहीं होंगे। भरपेट भोजन नहीं, जीने के लिए भोजन करेंगे। मुन्नी को अच्छे-से स्कूल में पढ़ाएंगे।'...

' सच्ची कह रहा है, तू।'

' हां, मुझे अपनी बिटिया का और तुम्हारा ख्याल है।'

लछिया उसे आश्चर्य से देख रही थी।

'अभी मुन्नी के लिए पटाखे खरीदने हैं। ज़रा रुक, मैं अभी आया। मुन्नी को साथ ले जा रहा हूं, इसकी थोड़ी तबीयत बहल जायेगी। ब्याह के बहुत दिनों के पश्चात् लछिया ने हरखू के चेहरे पर एक विचित्र आभा, एक बदलाव देखा उसे महसूस हुआ कि आज पहली बार उसकी दुनिया रोशन हुई। लक्ष्मी आज खुद चलकर आई है। तभी उसे कहीं दूर से सुनाई दिया - लछिया, तूने बड़ी मुश्किल से मेरी पूजा के लिए पैसे जोड़े थे। हरखू ने तेरे ही पैसे से इतने रुपये जीते थे। वे तुम्हारे ही तो पैसे थे। हरखू पश्चाताप की अग्नि में जलकर निखर उठा है। उसकी आंखें खुल गई हैं। वह आता ही होगा। लछिया आत्मविश्वास से भर उठी। वह माता लक्ष्मी की पूजा-वंदना के उपरांत घर के बाहर दिये जला रही थी। दिये के प्रकाश से अंधेरा छंटने लगा था।

वरिष्ठ अनुवादक (रिटायर्ड),

पूमरे/ हाजीपुर (वैशाली)

****

नियमों का पालन करें, नियम बचाए प्राण ।

नियम अगर भूले कभी, ले लोगे तुम जान ।।

शॉर्ट कट बिलकुल नहीं, चले नियम से रेल ।

नियम हमारे रक्षक हैं, नियम नहीं हैं खेल ।।

रेल हमारी पालक है, भारत की है शान ।

दिन दूनी रात चौगुनी, बढ़े मान सम्मान ।।

कर्मचारी के लिए, कर्म हैं केवल चार ।

सत्य, निष्ठा, ईमानदारी साथ में शिष्टाचार ।।

लेख

कबीर... एक प्रासंगिकता

- **विकास कुमार बघेल**

-

मध्यकाल को भारतीय हिंदी साहित्य के इतिहास का 'स्वर्णयुग' भी कह सकते हैं, इस काल में साहित्य, संस्कृति, धार्मिक एवं सामाजिक उन्मूलन का प्रदर्शन अपने उच्च शिखर पर था । इस काल को धार्मिक पुनरुत्थान और पुनर्जागरण का नाम दिया गया, जिसमें गुरुनानक, तुलसीदास, सूरदास, चैतन्य, कबीरदास, शेखफरीद, मो. जायसी, रामरहीम जैसे प्रख्यात कवियों का उदय हुआ जिन्होंने धर्म, जाति, रंग-भेद से ऊपर उठकर मध्यकालीन समाज के समक्ष ईश्वर, धर्म, नैतिकता, त्याग, सेवा, प्रेम, मातृ-भाव और मानवता की अटूट साझेदारी को प्रमुखता देकर लोगों को सत्यमार्ग पर चलने का संदेश दिया था ।

कबीर दास 15वीं शताब्दी के भारतीय रहस्यवादी कवि और भक्तिकालीन संत थे । उनकी वाणी एवं लेखन ने हिंदू धर्म के भक्ति आंदोलन को प्रभावित किया । कबीर दास जी का नाम हिंदी साहित्य की निर्गुण भक्ति शाखा एवं भक्तिकाल के प्रमुख कवियों में बड़ी सिद्धहस्त से लिया जाता है ।

कबीर काल से पहले समाज में हिंदुओं में जाति-प्रथा, धार्मिक अराजकता, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, स्पृश्य-अस्पृश्य, शराब-जुआ, अंधविश्वास, ब्राह्मणवाद का बढ़ता प्रभाव, ग्रस्त गरीब तबका और मुसलमानों का अपना वर्चस्व स्थापित करना इत्यादि गूढ़-रुढ़ियों से जकड़ा हुआ था जिसके उत्थान के लिए संघर्ष चल रहा था । ऐसे समय में कबीर का उदय होना और समाज उत्थान के लिए समाज-सुधार के रुप में देखा जाने लगा । कबीर समकालीन समय के एक महान संत कवि, समाज-सुधारक, रहस्यवादी और सामाजिक विद्रोह के प्रखर काव्य कवि माने जाते हैं । उनके काव्य में एक प्रकार की तड़प, विद्रोह, तथा मनुष्य से मनुष्य को जोड़ने के साथ-साथ समाज की संपूर्ण विकृतियों को दूर करने वाला मार्मिक सूत्र एवं क्रांति के अग्रदूत माने जाते हैं जो कि सृष्टि को अपने में समेटता चला जाता है । उनके काव्यों में अनुभूत एवं सार्वभौमिक सत्य है । विश्व के महान किसी भी साहित्यकार से कबीरदास की तुलना नहीं हो सकती, उन्होंने मानवता को सिंहासन पर आरुढ़ एवं प्रज्जवलित किया है ।

"कबीरदास" का जन्म 15वीं शताब्दी में राम तारा काशी में जुलाहे परिवार में हुआ था और वह बचपन से ही जुलाहे का कार्य करने लगे थे । उनके गुरु का नाम संत आचार्य 'रामानंद' था जिनके शिष्य बनकर उन्होंने उनका सानिध्य प्राप्त किया । कबीरदास की पत्नी का नाम 'लोई' था। उनके पुत्र का नाम 'कमाल' और पुत्री का नाम 'कमाली' था। उनके धर्म को लेकर अभी भी भ्रांतिया फैली हुई हैं कि कबीर हिंदू थे या मुस्लिम, लेकिन उनके दोहे जिस प्रकार से समाज में जागरुकता को फैलाने और धर्म को जाग्रत करने का प्रयास कर रहे थे उससे यह सिद्ध होता है कि वह एक महान समाज सुधारक, संत एवं महापुरुष व्यक्ति थे । कबीर ईश्वर को मानते थे और वह भगवान राम के बहुत बड़े भक्त थे। उनका मत था कि "जिस परमात्मा की तलाश में हम दर-दर भटकते रहते हैं वह तो हमारे अंदर है, बस हम अज्ञानवश उसे देख नहीं पाते" ।

कबीर दास की वाणी, साखी, सबद, और रमैनी के साथ ही उनकी रचनाओं में मुख्य रूप से राजस्थानी, खड़ी बोली, सधुक्कड़ी, अवधी, पूरबी, ब्रज भाषा का समावेश देखने को मिलता है । कबीर दास के दोहे लोगों के

जीवन को एक नई राह दिखाते हैं । वह संत के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे, उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज सुधार के कार्यों में लगा दिया। कबीर दास जी ने लोगों को एकता के सूत्र का पाठ पढ़ाया ।

कबीर के संबंध में प्रायः कहा जाता है कि कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन उनके अंदर काव्य प्रतिभा भरपूर विद्यमान थी । यद्यपि शुरुआती समय से ही वह अपने जुलाहे का कार्य किया करते थे तो अपने मुख से कुछ न कुछ गुनगुनाते रहते थे। हांलाकि वह राम जी के बहुत बड़े अनुयायी होने के कारण उन्हें अक्सर उन्हीं की स्तुति का गुणगान करने में बड़ा आंनद आता था । जब वह गुनगुनाते तो आने-जाने वाले राहगीर उनको सुन भाव-विभोर होकर रुक जाते थे और उनसे वही दुबारा से सुनने के लिए लालियत रहते थे क्योंकि उनको सुनना उन्हें बड़ा लुभावना लगता था । कहा जाता है कि जब वह गाते थे तो उनके जिव्हा पर सरस्वती विद्यामान हो जाती थी और एक के बाद एक स्वर अपने आप स्फूर्टिक हो जाते थे । उनकी इस काव्यात्मक शैली से लोग प्रभावित होने लगे, जिससे उनकी समाज में प्रसिद्धि बढ़ने लगी तो कुछ असामाजिक तत्व के अधर्मी विचारों वाले लोगों ने इसका विरोध करना शुरु कर दिया, जिससे कबीर को बहुत आघात पहुंचा, उन्होंने राम भजन गुनगुनाना बंद कर दिया, लेकिन उनके जो समर्थक थे, वह चाहते थे कि कबीर अपने भजनों को बंद न करें, बल्कि समाज को जाग्रत करने के उद्देश्य से जो अधार्मिकता का चोला ओढ़े हुए हैं उन्हें जागरुक करें, क्योंकि उस समय बाहरी आक्रमणकारी (मुस्लिम वर्ग) अपने पैर फैला रहा था और वह हिंदू समाज की मूर्ति पूजा एवं धार्मिक अनुष्ठानों का विरोध भी कर रहा था, जिससे हिंदू समाज में अपने धर्म की रक्षा को लेकर भय का माहौल व्याप्त था । उन्हें एक ऐसे जागरुक धार्मिक संत या गुरु की आवश्यकता थी जिसके द्वारा वह हिंदू समाज में जन-चेतना का आवाह्नन करें । इसके लिए उन्हें कबीर में ही अपने समाज-सुधार का भावी प्रतिनिधित्व करने वाला अनुयायी दिखाई देने लगा । उन्होंने कबीरदास जी को इसके लिए आग्रह किया, कबीर दास ने तो वैसे ही समाज के लिए कुछ करने की इच्छा को लेकर समाज में फैली कुरीतियों पर आघात करने का फैसला कर लिया था और अपने काव्य-कविता रुपी दोहों के द्वारा समाज में फैल रहे अधार्मिकता एवं असामाजिकता के उत्थान का बीड़ा उठाने के लिए अपने विस्मयी रुप में विशिष्ट दोहों के माध्यम से समाज फैली कुरीतियों को दूर करने में जुट गए ।

कबीर के दोहों में विशेषतः भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा जैसी शैली का समावेश स्पष्ट दिखाई देता है । उनकी काव्यात्मक शैली में उनकी अच्छी खासी पकड़ होने के कारण, वे व्यंजना, लक्षणा, वक्रोक्ति, अलंकार, रीति, छंद-दोहे आदि में अनायास ही बोलना और लिखना उनकी विशेषता बन गई थी । उनके समकालीन गुरुनानक, चैतन्य, सूरदास एवं तुलसीदास, मो. जायसी, रामरहीम एवं शेख फरीद जैसे भक्तिकाल के शिरोमणि भी थे जिनका पूरे हिन्दुस्तान में धार्मिक भक्ति भावना और समाज में जागरुकता को लेकर एक प्रकार का उन्माद था और उनका यह प्रचार-प्रसार एक तरह से समाज में फैली बुराइयों का उन्मूलन करना था । ऐसे में कबीरदास ने अपनी एक पहचान कायम रखने के लिए विविध शैलियों और अलंकारों का अपने दोहों में समावेश किया । उनके छंद-दोहे इतने प्रसिद्ध हो गए जिनको उनके समकालीन कवियों नें अपने काव्य में समावेश करना प्रारंभ कर दिया क्योंकि उनके दोहे और छंद समाज में फैली कुरीतियों पर ब्रज बन कर प्रहार कर रहे थे, जो समाज को जागरुकता की ओर ले जाने में एक अंदोलन के रुप में आकार लेने लगा । जनता इनको अपनाने लगी क्योंकि उस समय इन दोहों के अर्थ का मतलब निकालना बाहरी आक्रमणकारियों के वश के बाहर था और कबीर जी समाज सुधारक के रुप में आम लोगों में अपनी पहचान बना चुके थे और जिससे लोगों में धार्मिक भावना का उदय होने लगा और समाज का उत्थान भी होने लगा ।

"जाति हमारी आत्मा, प्राण हमारा नाम,
अलख हमारा इष्ट, गगन हमारा ग्राम।।"

कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से समाज के बीच आपसी सौहार्द एवं ताल-मेल को बढ़ाने के कार्य में विशेष योगदान दिया । कबीर ने कोई पंथ नहीं चलाया, कोई मार्ग नहीं बनाया, बस उनका लोगों से इतना ही कहना है कि वे अपने अंतर्मन में झांके और अपनी जीवात्मा को पहचान कर सबके साथ बराबर का व्यवहार करें क्योंकि हर प्राणी के अंदर कोई भेदभाव नहीं होता । जब सबकी जीवात्मा एक समान है, फिर सामाजिक स्तर पर आपसी भेदभाव क्यों? कबीरदास हिंदी के कालजयी अभूतपूर्वक रचनाकार और महान दृष्टिकृता थे जिन्होंने भविष्य में होने वाली जाति-प्रथा एवं धर्म को लेकर अराजकता तथा आपसी द्वेष की भावना से ग्रस्त समाज के उत्थान के लिए अपनी रचनाओं में इसका विशेष उल्लेख किया है जोकि आज भी हमारे जीवन में जीवंत महसूस होता है ।

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे, इसलिए उनके दोहों को उनके शिष्यों द्वारा ही लिखा या संग्रहित किया गया था। उनके दो शिष्यों, भागोदास और धर्मदास ने उनकी साहित्यिक विरासत को संजोया। कबीर के 226 दोहों एवं छंदों को सिख धर्म के ग्रंथ "श्री गुरु ग्रन्थ साहिब" में भी शामिल किया गया है।

उनके शिष्यों द्वारा लिखी गई प्रमुख रचनाएं निम्न हैं -

- कबीर शब्दावली: इस ग्रंथ में मुख्य रूप से कबीर जी ने 'आत्मा का परमात्मा' से संबंधित जानकारी बताई है।
- कबीर दोहवाली: इस ग्रंथ में मुख्य तौर पर कबीर जी के दोहे सम्मलित हैं ।
- कबीर ग्रंथावली: इस ग्रंथ में कबीर जी के पद व दोहे सम्मलित किये गये हैं ।
- कबीर सागर: यह सूक्ष्म वेद है जिसमें परमात्मा कि विस्तृत जानकारी है ।

साहित्य लेखों में दर्ज कबीरदास का जन्मकाल 1455 ई. एवं मृत्युकाल 1518 ई. में माना जाता है ।

"कबीरदास ने अपने निम्न दोहो से समाज की कुरीतियों पर तीखा प्रहार किया है"

♣ कबीर जिनि हम जाए ते मूये, हम भी चालण हार।
जे हमको आगै मिले, तिन भी बंध्या भार ।।

अर्थात- कबीर कहते हैं कि जिन्होंने हमें जन्म दिया, वे चल बसे। अब हमारी बारी है, हम भी कूच करने वाले हैं, जिनको हमने जन्म दिया वे भी भविष्य में चल बसेंगे, क्योंकि वे भी भार से बंधे हैं ।

♣ कबीर रोवण हारे भी मुये, मुये जलावण हार ।
हा-हा करते ते मुये, कासनि करौ पुकार ।।

अर्थात- कबीर कहते हैं कि मनुष्य रोज देखता है सब को मरते हुए- जो शव को जलाता है, तो उसके प्रिय उसकी मृत्यु पर हाय-हाय करते है, वे भी मरते हैं अर्थात सभी मरणशील है । कोई नश्वर नहीं ।

♣ कबीर विष के बन मैं घर, किया सर्प रहे लपटाइ ।
ताथे जियरै डर रहो, जागत रैनि विहाइ ।।

अर्थात- कबीर कहते हैं कि यह संसार विष का वन है, इस वन में विष रुपी सर्प हैं, जो मनुष्य से लिपट जाते हैं, इनसे मुक्ति पाना कठिन है । कबीर इन्हीं सर्प से भयभीत हैं और रात भर इसी चिंता में जागते बीतती है ।

- ♣ कबीर राम रहा तिनि काहि लीया, जुरहा पहुंती आई ।
  मंदिर लागै द्वार थै, तब कुछ कारणां न जाइ ।

अर्थात- कबीर जन्म-मृत्यु से भयभीत होकर परमार्थ पर बल दे रहे हैं, वृद्धावस्था से पहले जो भी हो सके कर लें, अर्थात ईश्वर का नाम जपते रहो, समय निकल जाने पर इस शरीर का साथ भी काम न आयेगा ।

- ♣ कबीर हरि सूं हेत करि, कूड़ै चित न लाव।
  बांध्या बार सटीक कै, ता पसु किती एक आव ।।

अर्थात- मृत्यु निकट हो तो कबीर कहते हैं कि हे मनुष्य ! जैसे कसाई के घर बंधे पशु की कोई आयु नहीं होती, वैसे ही तुम्हारे ऊपर काल की तलवार लटक रही है । ऐसा समझकर बुरे कार्यों में समय न लगाओं अर्थात प्रभु का स्मरण करें।

- ♣ मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार ।
  तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहुरि न लागे डारि ।।

अर्थात- कबीर जी मनुष्य के जीवन की महत्ता समझाते हुए कहते हैं कि मानव जन्म पाना कठिन है। यह शरीर बार-बार नहीं मिलता। जो फल वृक्ष से नीचे गिर पड़ता है वह पुन: उसकी डाल पर नहीं लगता। इसी तरह मानव शरीर छूट जाने पर दोबारा मनुष्य जन्म आसानी से नही मिलता है और पछताने के अलावा कोई चारा नहीं रह जाता ।

- ♣ माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
  कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।।

अर्थात- कबीर जी ने वाणी के माध्यम से उन लोगों पर कटाक्ष किया है जो लम्बे समय तक हाथ में माला तो घुमाते हैं, पर उनके मन का भाव नहीं बदलता। हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन को सांसारिक आडंबरों से हटाकर भक्ति में लगाओ ।

- ♣ पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात ।
  एक दिना छिप जाएगा, ज्यों तारा परभात ।।

अर्थात- कबीर जी लोगों को नेकी करने की सलाह देते हुए, इस क्षणभंगुर मानव शरीर की सच्चाई लोगों को बता रहे हैं कि पानी के बुलबुले की तरह मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर है। जैसे भोर होते ही तारे छिप जाते हैं, वैसे ही ये देह भी एक दिन विलीन हो जाएगी ।

- ♣ जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
  मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान ।।

अर्थात- कबीर जी समाज में फैले जातिवाद पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि किसी व्यक्ति से उसकी जात नहीं पूछनी चाहिए बल्कि ज्ञान की बात करनी चाहिए। क्योंकि असली मोल तो तलवार का होता है, म्यान का नहीं ।

- ♣ कबीर, पत्थर पूजें हरि मिले तो मैं पूजूं पहार।
  तातें तो चक्की भली, पीस खाये संसार ।।

अर्थात- कबीर जी हिंदुओं को समझाते हुए कहते हैं कि किसी भी देवी-देवता की आप पत्थर की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करते हैं जो कि शास्त्र विरुद्ध साधना है जो कि हमें कुछ नहीं दे सकती। इनकी पूजा से अच्छा चक्की की पूजा कर लो जिससे हमें खाने के लिए आटा तो मिलता है ।

- ♣ गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागूं पाय ।
  बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो मिलाय॥

अर्थात- जब आपके समक्ष गुरु और ईश्वर दोनों विद्यमान हो तो पहले गुरु के चरणों में अपना शीश झुकाना चाहिए, क्योंकि गुरु ने ही हमें भगवान के पास पहुंचने का ज्ञान प्रदान किया है।

- ♣ नहाये धोये क्या हुआ, जो मन मैल न जाए ।
  मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाए ।।

अर्थात- कबीर जी कहते हैं कि आप कितना भी नहा-धो लीजिए, लेकिन अगर मन साफ़ नहीं हुआ तो उस नहाने का क्या फायदा, जैसे मछली हमेशा पानी में रहती है लेकिन फिर भी वो साफ़ नहीं होती, मछली में तेज बदबू आती है।

- ♣ दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय ।
  जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ।।

अर्थात- कबीर जी कहते हैं कि दुःख के समय सभी भगवान् को याद करते हैं पर सुख में कोई नहीं करता । यदि सुख में भी भगवान् को याद किया जाए तो दुःख हो ही क्यों ।

वरिष्ठ अनुवादक,
इरीन, नासिक रोड

****

कविता

भारतीय विद्‌युत रेल

- वीरेन्द्र कुमार रुलानिया

सौ वर्ष की हो गयी भारतीय विद्‌युत रेल ।
देश को दिशा देती भारतीय विद्‌युत रेल ।।

बोरी बन्दर से चलकर विद्‌युत रेल ।
देश के कोने-कोने तक पहुंची विद्‌युत रेल ।।

रेल की गति बढ़ाई विद्‌युत रेल ।
यात्रियों के लिए आराम बढ़ाया विद्‌युत रेल ।।

माल ढुलाई बढ़ाई विद्‌युत रेल ।
वंदे भारत, नमो भारत लायी विद्‌युत रेल ।।

विश्व के ऊंचे पुल पर दौड़ती विद्‌युत रेल ।
सुरंगों की गहराइयों को पार करती विद्‌युत रेल ।।

ऊर्जा पैदा करती विद्‌युत रेल ।
ईंधन को बचाती विद्‌युत रेल ।।

देश का तेज विकास करती विद्‌युत रेल ।
देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करती विद्‌युत रेल ।।

सीमा पर अस्त्र-शस्त्र पहुंचाती विद्‌युत रेल ।
वीरों को विजय दिलाती विद्‌युत रेल ।।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक पहुंचाती विद्‌युत रेल ।
आसाम से गुजरात तक पहुंचती विद्‌युत रेल ।।

प्रदूषण कम करती विद्‌युत रेल ।
देश की एकता बढ़ाती विद्‌युत रेल ।।

मंहगाई घटाती विद्‌युत रेल ।
देश सुरक्षा में हाथ बटाती विद्‌युत रेल ।।

इरीन में पढ़ाते विद्युत रेल ।
प्रशिक्षणार्थी भी अपनाते विद्युत रेल ।।

रेल मंत्री जी की लाड़ली विद्युत रेल ।
तो प्रधानमंत्री जी की भी दुलारी विद्युत रेल ।।

ससम्मान सौ वर्ष पूरे किये विद्युत रेल ।
देश मना रहा हर्षोल्लास शतक वर्ष ।।

हर तरफ हो रहा जयघोष, जय हो विद्युत रेल ।
जय हो विद्युत रेल कर्मी, जय हो भारतीय विद्युत रेल ।।

प्राध्यापक (इलेक्ट्रॉनिक्स)

इरीन, नाशिक रोड

****

कुछ भी हो सकता है, जब लाल हो गए पार ।

पल भर की भूल से, रूक जाए संचार ।।

रक्षक है – खतरा सिगनल, इसे कभी न करिए पार ।

एकाग्रता में निहित हैं, संरक्षा के सब सार ।।

खतरा सिगनल है जहां, रहे उसी पर ध्यान ।

मुट्ठी में है आपक, न जाने कितनी जान ।।

कविता

और नहीं हारुंगा

- अनिल कुमार तिवारी

अक्सर हारता हूं खुद से, और नहीं हारुंगा,
कोशिशें करुंगा फिर से, और नहीं हारुंगा,

अपनों से ही हार जाता हूं और नहीं हारुंगा,
समाज ने कब यूं बख्शा है, और नहीं हारुंगा,

विश्वासों में हारता रहा, अब और नहीं हारुंगा,
क्यूं जीतकर भी मैं हारा हूं, और नहीं हारुंगा,

क्यूं समय पर जबाब न दिये, और नहीं हारुंगा,
राष्ट्र ही प्रथम है, सबकुछ है, और नहीं हारुंगा,

स्वधर्म शीश माथे, पर धर्म से और नहीं हारुंगा,
प्रेम कोई हथियार नहीं, प्रेम में और नहीं हारुंगा,

मैं शुद्ध भारतीय हूं, विजयी हूं, और नहीं हारुंगा,
सर्वजन हिताय, स्वजन हिताय, और नहीं हारुंगा,,

सेवानिवृत्त, सहायक मंडल
विद्‌युत इंजीनियर (निर्माण),
पश्चिम मध्य रेलवे, भोपाल

कविता

छुक-छुक की बात

- अमित सुनील मेशराम

छुक-छुक करती भागी रेल,
हवा से करती रोज़ अपील।
"थोड़ा रुकने दे, दम भर लूं,"
मंज़िल बोली, "चल, बढ़ तू!"

स्टेशन आया, भीड़ लगी,
कहीं हँसी, कहीं आँखें झुकी।
कोई गले लगे, कोई विदा,
कोई चुपचाप आंसू पी गया।

धुआं उठा, सीटी बजी,
पटरी बोली, "अब मत रुको जी!"
पल में पहाड़, पल में समुंदर,
चलती जाए ये बिना सिकंदर।

कभी खिड़की से दिखे गांव,
कभी शहर की रंगीन छांव।
रात अंधेरी, तारे चमके,
सपनों जैसे दृश्य दमके।

किसी ने पन्नी खोली अभी,
समोसे की खुशबू आई तभी।
चायवाले की मीठी तान,
"गर्म चाय है, लेना श्रीमान!"

बोगी में बातें, किस्से हज़ार,
कोई सुने गीत, कोई अख़बार।
कभी हँसी, कभी सोच गहरी,
चलती रेल, जैसे धड़कन ठहरी।

हर सफर एक किस्सा बन जाए,
कुछ चेहरे यादों में बस जाएं।
रेल न रुके, ये जीवन न थमे,
पटरी पर जैसे सपने जमे!

सीनियर सेक्शन इंजीनियर

नागपुर मंडल, मध्य रेल

कविता

भारतीय रेल

- जयराम कुर्सीजा

धुंआ छोड़ती रेल पुरानी,
धीरे-धीरे गति थी आनी,
कोयले का था भार बड़ा.
रफ्तार मगर थी मंद खड़ा।

फिर आया डीजल का इंजन,
गति उसकी भी थी मध्यम,
धुंआ उड़े, अंबर ढके सब,
ध्वनि, वायु प्रदुषण हर तरफ।

फिर आई बिजली की धारा,
नया हुआ रेलों का कारा,
तारों से जब शक्ति आई,
पटरी-पटरी गति है छाई।

सोंधी माटी है मुस्काती,
इंजन लय से है गाती,
पूर्ण रेल विद्युतीकरण का सपना,
बना प्यारा देश उजला अपना।

वरिष्ठ प्राध्यापक (प्रशा./पी.ओ.)
इरीन, नासिक रोड, मध्य रेल

****

कविता

भावना की दीवार

- प्रमोद सोनी

भावना की दीवार,
कागज पर ढह गई।
शब्दों की नदी आज,
तीर तोड़, बह गई ।

आंखों की खिड़की से,
भाव दाखिल हुए।
उथल-पुथल हो गए,
अश्रु नाकाबिल हुए।
ओंठों की बात सभी,
कलम मेरी कह गई ।
भावना की दीवार,
कागज पर ढह गई ।

गम के बाजार में,
सिसकी की बोली।
बिकता नहीं है कुछ,
भरती है झोली।
किस्मत मदारी हाथ,
बजे दर्द बीन है ।
ताली संग नाच रहा,
हर तमाशबीन है ।
मन की जो आस थी,
मन में ही रह गई ।

भावना की दीवार,

कागज पर ढह गई ।

मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,

बिलासपुर, दक्षिण पूर्व मध्य रेल से सेवानिवृत्त

****

भूल शिकायत, हम तनिक, इस पर करें विचार ।

आखिर हम क्यों हो गए, खतरा सिगनल पार ।।

ड्यूटी से घर जाइए, करिए खूब आराम ।

ड्यूटी पर फिर कीजिए, संरक्षा सहित काम ।।

मन प्रसन्न सदा रहे, सदा स्वास्थ्य पर ध्यान ।

स्पाड ना हो भूलकर, ड्यूटी अपनी जान ।।

सावधानी हटी अगर, होगा बड़ा अनर्थ ।

दुर्घटना घटे नहीं, इतना हम बने समर्थ ।।

मारे गए लोग कितने, कितने हुए अपंग ।

हमने जब-जब किया, रेल नियम को भंग ।।

कविता

मेरी इल्तिज़ा

- मंगेशरत्न सिंह

इल्तिज़ा है, दुआं मेरी हमेशा साथ रखना,
बनाओ कोई गजल तो हमें याद रखना,
तुम्हारी तमन्नाओं के फूल जब-जब खिले,
अपनी पहली मुलाकात की तस्वीर याद रखना,
जाओ कभी भी कहीं भी दूर हमसे,
अपनी दोस्ती का महका गुलाब याद रखना ।

,

शारीरिक प्रशिक्षण प्रशिक्षक,
भारतीय रेल राष्ट्रीय अकादमी,
वड़ोदरा, गुजरात

****

स्पाड आप का दुश्मन है, उससे रहिए दूर ।
फिर घर में देखिए, अपने चहरे पर नूर ।।

लाल के पार क्या है? नहीं आप को ज्ञान ।
इसीलिए हर लाल को, मिले पूर्ण सम्मान ।।

कविता

कितनी-कितनी बार

- **श्रीमती विजया गोस्वामी**

कितनी-कितनी बार
तुम्हारी आंखों की गहराई में
पढ़ा है मैंने
प्रेम का पाठ -
जैसे पहली बार
मुझ दुल्हन की
सेज पर सुहाग रात में
घूंघट हटाती
तुम्हारी उंगलियां
और हीरे जैसी चमकती
हमारी चार आंखें
गुनती भेद भरे रहस्य
गृहस्थ के पहले सोपान के –
अलंकरण उतारती
तुम्हारे दोनों हाथों की तर्जनी
और अनामिकाएं
पहना जाती हैं
संकुचित हो रहे प्रेम का
अंतरंग आभूषण –
आगे जिस अंधकार में
हमें जाना है
वह कितना मधुर

और सुहाना होगा –

इसकी कल्पना तो

स्विच बुझाते हाथ भी

नहीं कर सकते –

पति होने का गौरव

और पत्नी होने का आनंद

बहुत कुछ इसी विधि से

शुरू होता है!

कवयित्री/लेखिका

कृषि विपणन निदेशालय,

राजस्थान सरकार से सेवानिवृत्त

****

गेटमैन के बिना, जहां – जहां है गेट ।

सावधान हो जाइए, आ सकता है प्रेत ।।

गेट पर जमीं रहे, चौकस तेज निगाह ।

हर हाल, हर काल में, कम ना हो उत्साह ।।

सीटी खूब बजाइए, जब – जब आए गेट ।

वरना हो सकती है, ट्रेन आपकी लेट ।।

कविता

मैं रेल की बात सुनाता हूं

- **फूलचंद धुर्वे**

है कर्म ही जिसकी देश सेवा-2, गुणगान उसीके गाता हूं,
भारत का रेल कर्मी हूं, मैं रेल की बात सुनाता हूं ॥ ध्रु ॥

भाप, डीजल, विद्‌युत से क्या, रेल हाइड्रोजन से चलाएंगे।
मेट्रो, शताब्दी, वंदे भारत अब बुलेट ट्रेन से जाएंगे ॥

है चिनाब पुल दुनिया में ऊंचा, यही सोच-2 के मैं इतराता हूं,
भारत का रेल कर्मी हूं, मैं रेल की बात सुनाता हूं ॥ 1 ॥

सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्र विकास में अहम भूमिका निभाई है।
करोड़ों सफर करते हर दिन छू रहा नई ऊंचाई है ॥

करें पर्यावरण और राष्ट्र सुरक्षा, मैं प्रण-2 यही दोहराता हूं,
भारत का रेल कर्मी हूं, मैं रेल की बात सुनाता हूं ॥ 2 ॥

उन्नत और नई तकनीक से संचालन होते देखा है।
यात्री की सुरक्षा, अच्छी सुविधा ये देश की जीवन रेखा है ॥

है भरोसेमंद एवं किफायती, मैं बात-2 यही बतलाता हूं,
भारत का रेल कर्मी हूं, मैं रेल की बात सुनाता हूं ॥ 3 ॥

है कर्म ही जिसकी देश सेवा-2, गुणगान उसी के गाता हूं।
भारत का रेल कर्मी हूं, मैं रेल की बात सुनाता हूं ॥

वरिष्ठ लेखापाल

लेखा विभाग, मध्य रेल, नागपुर

<u>हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम</u>

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **100%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **90%** के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **60%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**

9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियां द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**30%** (न्यूनतम)	**30%** (न्यूनतम)	**30%** (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**30%** (न्यूनतम)	**30%** (न्यूनतम)	**30%** (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें		वर्ष में 2 बैठकें	
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक),	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति			
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**45%**	**35%**	**25%**
			(न्यूनतम अनुभाग)	
			सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।	

मराठी खंड

कविता

मराठीचा जागर

- अभिजीत बाबुराव रोहेकर

आईच्या उदरात ऐकला ,
पहिल्यांदा मराठी बाज

मी आहे आई बाळा ,
स्पंद असे जाहले खास

जगात येऊन कानी पडले ,
आनंदघन असे हे आवाज

हीच आपुली माय आहे ,
तीच ओळख पटली आज

गेले माझ्या पटलावर उमजत ,
वेल शब्दांची लगडली त्यात

आठवते ते बोल बोबडे ,
गिरवीत बसलो हा साज

अज्ञानातून ज्ञानासोबत ,
असा घडविला प्रवास

अ आ इ ई
ग म भ न
य र ल व
ह ळ क्ष ज्ञ

मुळाक्षरे म्हणू नये तीज,
आहे वाघिणीचे दूध

पचवी जो मिळवी तो बळ ,
जणू सहस्त्र बाहूंचे तेज

असे वारसा धर्म संस्कृतीचा ,
वसा पूर्वजांचा ठेव माज त्याचा

नसा नसात नाद भिडला ,
टाळ मृदंग गर्जत लढला

मराठी भाषा श्वास आपला ,
अभिमानाचां ध्यास आपला

पुढचा जन्म विधाता मागतो ,
इथल्या महाराष्ट्र माय भूमीत

घालतो जागर मराठीचा आज !
पावन सोहळा मराठीचा आज!

अजरामर अभिजात
मराठी भाषा चिरायू भव !!

एमसीएम/सीयूजी/दूरसंचार/मुख्यालय,
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार
इंजीनियर कार्यालय, मध्य रेल

****

मुंबई मंडल पर दिनांक 15.04.2025 को डीजल लोको शेड कल्याण में आयोजित राजभाषा विषयक बैठक के दौरान “राजभाषा हिंदी और उसका कार्यान्वयन” विषय तथा “एच.एच.पी. लोको कार्य प्रवाह” विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

दिनांक 28.05.2025 को कल्याण लोको शेड में राजभाषा विषयक बैठक का आयोजन किया गया । बैठक में (दिनांक 24.03.20225 से 28.03.2025 तक) चलाई गई 5 दिवसीय हिंदी कार्यशाला में भाग लेने वाले कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए । बैठक के पश्चात कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

भुसावल मंडल पर दिनांक 08.05.2025 को स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अकोला की राजभाषा विषयक बैठक का सूत्रसंचालन करते हुए समिति सचिव।

भुसावल मंडल के बड़नेरा में दिनांक 28.05.2025 को आयोजित राजभाषा प्रश्नमंच में कर्मचारी को पुरस्कार देते हुए डॉ. शंकरसिंह परिहार, राजभाषा अधिकारी, भुसावल ।

नागपुर स्टेशन पर दिनांक 31.03.2025 को समाप्त तिमाही की राजभाषा विषयक बैठक में स्टेशन निदेशक के साथ चर्चा करते हुए राजभाषा अधिकारी ।

नागपुर मंडल पर अजनी स्टेशन की दिनांक 31.03.2025 को समाप्त तिमाही की राजभाषा विषयक बैठक में चर्चा करते हुए कर्मचारी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुणे द्वारा 15 एवं 16 मई 2025 को पुणे में पहली बार आयोजित हुए राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ता के रूप में डॉ. विभावरी गोरे, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), मध्य रेल को आमंत्रित किया गया।

माटुंगा कारखाने पर कार्यरत कर्मचारियों के लिए दिनांक 26.05.2025 से दिनांक 30.05.2025 तक 05 दिवसीय हिंदी कर्यशाला का आयोजन किया गया।

सानपाड़ा कारखाने पर दिनांक 18 एवं 19 मार्च, 2025 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

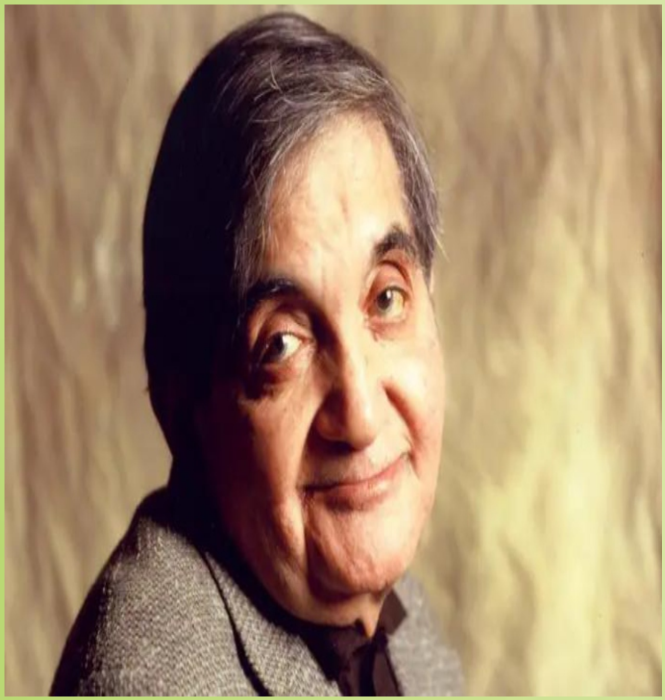

निर्मल वर्मा

(जन्म: 3 अप्रैल, 1929
मृत्यु: 25 अक्तूबर, 2005)

हिन्दी के आधुनिक कथाकारों में एक मूर्धन्य कथाकार और पत्रकार निर्मल वर्मा को मूर्तिदवी पुरस्कार (1995), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1985), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

निर्मल वर्मा की प्रसिद्ध कृतियों में "रात का रिपोर्टर", "एक चिथड़ा सुख", "लाल टीन की छत" और "वे दिन" शामिल हैं

निर्मल वर्मा की भाषा-शैली में एक अनोखी कसावट है, जो विचार सूत्र की गहनता को विविध उद्धरणों से रोचक बनाती हुई विषय का विस्तार करती है। उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार, राम मनोहर लोहिया अतिविशिष्ठ सम्मान, साधना सम्मान, साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता और अन्य कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था। वे एक प्रसिद्ध हिंदी कथाकार, उपन्यासकार और निबंधकार थे। उनकी रचनाएं हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

प्रमुख कृतियां

उपन्यास	कहानी संग्रह	आलोचनात्मक लेखन
• वे दिन (1964) • लाल टीन की छत (1974) • एक चिथड़ा सुख (1979) • रात का रिपोर्टर (1989) • अंतिम अरण्य (2000)	• परिंदे • बाज और सांप **यात्रा वृत्तांत** • जहां कोई वापसी नहीं	• उपन्यास की मृत्यु और उसका पुर्नजन्म • संस्कृति, समय और भारतीय उपन्यास

प्रसिद्ध उद्धरण

- किसी के बारे में सब कुछ जान लेना, उसे फिर से अजनबी बना देता है।
- अंधेरे में संगीत दो व्यक्तियों को कितना पास खींच लाता है।
- इस दुनिया में कितनी दुनियाएँ खाली पड़ी रहती हैं, जबकि लोग गलत जगह पर रहकर सारी ज़िंदगी गँवा देते हैं।
- जुदाई का हर निर्णय संपूर्ण और अंतिम होना चाहिए: पीछे छोड़े हुए सब स्मृति-चिह्नों को मिटा देना चाहिए, और पुलों को नष्ट कर देना चाहिए, किसी भी तरह की वापसी को असंभव बनाने के लिए।
- आदमी को पूरी निर्ममता से अपने अतीत में किए कार्यों की चीर-फाड़ करनी चाहिए, ताकि वह इतना साहस जुटा सके कि हर दिन थोड़ा-सा जी सके।

केदारनाथ अग्रवाल
जन्म - 01 अप्रैल 1911
निधन - 22 जून 2000

मन्नू भंडारी
जन्म -03 अप्रैल 1931
निधन – 15 नवंबर 2021

माखनलाल चतुर्वेदी
जन्म -04 अप्रैल 1889
निधन - 30 जनवरी 1968

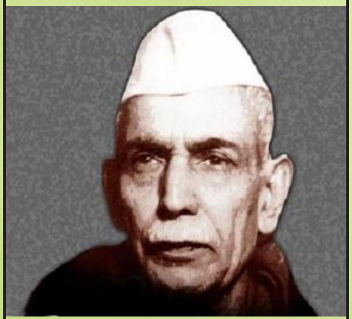

राहुल सांकृत्यायन
जन्म - 09 अप्रैल 1893
निधन– 14 अप्रैल 1963

रामेश्वर शुक्ल अंचल
जन्म - 01 मई 1915
निधन - 12 अक्तूबर 1995

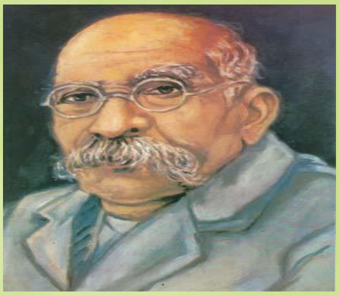

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
जन्म -15 मई 1864
निधन- 21 दिसंबर 1938

मंगलेश डबराल
जन्म -16 मई 1948
निधन- 09 दिसंबर 2020

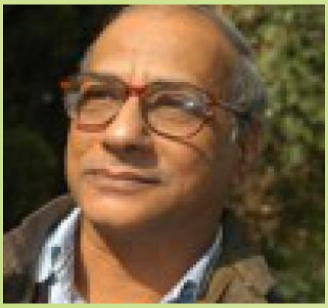

सुमित्रानन्दन पन्त
जन्म -20 मई 1900
निधन- 28 दिसंबर1977

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
जन्म -20 जून 1940
गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद से 2001 में सेवाननवृत्त

विष्णु प्रभाकर
जन्म -21 जून 1912
निधन- 11 अप्रैल 2009

मुद्राराक्षस
जन्म -01 अप्रैल 1911
निधन -22 जून 2000

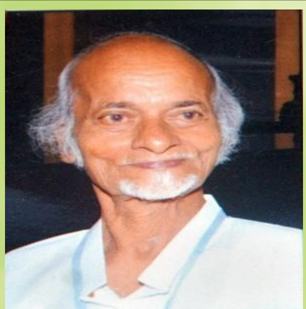

ओमप्रकाश वाल्मीकी
जन्म -01 अप्रैल 1911
निधन -22 जून 2000